वाला कोई नहीं है; इसलिए वह जो चाहे कर सकता है, कोई उसे नहीं रोक सकता। यदि विषयीकर्मों में किसी शत्रु से विघ्न का भय हो तो वह अपनी शक्ति से उसे समाप्त करने की योजनाएँ बनाया करता है।

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।।१९।।

तान्=उन; **अहम्**=मैं; **द्विषतः**=द्वेष करने वाले; **क्रूरान्**=क्रूरकर्मियों को; **संसारेषु**=भवसागर में; **नराधमान्**=मनुष्यों में अधम ; **क्षिपामि**=गिराता हूँ ; **अजस्रम्**=निरन्तर; **अशुभान्**=अशुभ; **आसुरीषु**=आसुरी; **एव**=ही; **योनिषु**=योनियों में।

अनुवाद

उन द्वेष करने वाले दुराचारी तथा क्रूरकर्मी नराधमों को मैं भवसागर में निरन्तर आसुरी योनियों में ही गिराता हूँ।।१९।।

तात्पर्य

स्पष्ट है कि जीव को किसी भी योनि में डालने का परमेश्वर को पूरा अधिकार है। आसुरी स्वभाव वाले चाहे श्रीभगवान् की प्रभुसत्ता को न मानें और मनमाना आचरण करें; परन्तु पुनर्जन्म का निर्धारण तो श्रीभगवान् के निर्णय से ही होगा, उनकी इच्छा से नहीं। श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कन्ध में उल्लेख है कि जीव की देह का नाश होने पर उसे माँ के गर्भ में स्थापित कर दिया जाता है, जहाँ दैवी-शक्ति की प्रेरणा से उसे फिर से उपयुक्त देह मिलती है यही कारण है कि प्राकृत-जगत् में पशु, पक्षी, कीट मनुष्य आदि कितनी ही योनियाँ हैं। इन सब की व्यवस्था दैवी प्रकृति के हाथ में है। यह सब कुछ अकस्मात् नहीं होता। जहाँ तक आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों का सम्बन्ध है, श्लोक से स्पष्ट है कि उन्हें निरन्तर आसुरी योनियों में गिराया जाता है, जिससे वे द्वेषी और नराधम बने रहते हैं। ये आसुरी योनियाँ सदा काम क्रोध, हिंसा और द्वेष से पूर्ण तथा अशुद्ध रहती हैं। अतएव ऐसे मनुष्य प्रायः जंगली पशुओं के समान होते हैं।

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।।२०।।

आसुरीम्=आसुरी; **योनिम्**=योनि को; **आपन्नाः**=प्राप्त हुए; **मूढाः**=मूढ़ मनुष्य; **जन्मनिजन्मनि**=जन्म-जन्म में; **माम्**=मुझको; **अप्राप्य**=प्राप्त न होकर; **एव**=निःसन्देह; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **ततः**=उससे भी; **यान्ति**=जाते हैं; **अधमाम्**=अधम; **गतिम्**=गति को।

अनुवाद

हे अर्जुन! जन्म-जन्म में आसुरी योनि को प्राप्त होकर वे मूढ़ मुझ को कभी